3

शांति के लिए शिक्षा एवं शांति निर्माता के रूप में शिक्षक

नरेश कुमार*

विश्व में शांति बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। शांति के लिए शिक्षा जीवन में एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका का निर्वाह करती है और शिक्षा के अभाव में शांति, सुख और विकास की कल्पना की ही नहीं जा सकती। शिक्षा अपने आप में एक व्यापक शब्द है और इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के संदर्भों में किया जाता है, जैसे— मूल्य शिक्षा, समावेशी शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, विषय विशेष की शिक्षा, शांति शिक्षा आदि। लेकिन जब शिक्षा को शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में देखते हैं तो यह शिक्षा के अन्य सभी संदर्भों को पीछे छोड़ देती है। शांति के लिए शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें अन्य सभी प्रकार की शिक्षाएँ स्वतः ही समाहित होती हैं अथवा हो जाती हैं। किसी भी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास एवं संबंधित ज्ञान की प्राप्ति हो सकता है। लेकिन शांति के लिए शिक्षा की अपनी एक विशिष्ट एवं व्यापक अवधारणा है। यह अवधारणा अन्य प्रकार की शिक्षाओं से परे शांति के लिए शिक्षा पर बल देती है। शांति के लिए शिक्षा का उद्देश्य मनुष्यों और राष्ट्रों के बीच न केवल शांति स्थापित करना है अपितु उसे चिरस्थायी बनाए रखना है। शांति के लिए शिक्षा में हम शांति की बात जिस संदर्भ में करते हैं, उस संदर्भ में वह शिक्षा को गढ़ने-सँवारने वाली दृष्टि बन कर उभरती है तथा यह शिक्षा के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में आने वाले एक युगांतकारी बदलाव का संकेत है।

शांति के लिए शिक्षा वास्तव में समूचे विश्व में शिक्षा के माध्यम से अहिंसा स्थापित करने का एक माध्यम एवं विचार है। इसका उद्देश्य मनुष्यों और राष्ट्रों के बीच न केवल शांति स्थापित करना है अपितु उसे चिरस्थायी बनाए रखना भी है। शांति के लिए शिक्षा, 'शांति-शिक्षा' से भिन्न है। एक ओर 'शांति-शिक्षा' में 'शांति' की स्थिति पाठ्यचर्या में शामिल एक विषय की तरह है; वहीं दूसरी ओर शांति के लिए शिक्षा में शांति की बात जिस रूप में कर रहे हैं, उस रूप में वह शिक्षा को गढ़ने-सँवारने वाली दृष्टि बन कर उभरती है। यह शिक्षा के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में आने वाले एक युगांतकारी बदलाव का संकेत है। शांति के लिए शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है। यह जीविका के लिए सिर्फ़ प्रशिक्षण मात्र नहीं है, बल्कि

**प्रवक्ता (शिक्षा)*, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार, ज़िला— दक्षिण-पश्चिम, घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली

इसका मकसद है लोगों को ऐसे मूल्यों, कौशलों और अभिवृत्तियों आदि से युक्त करना, जिनसे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार रखने वाले पूर्ण व्यक्ति और उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद मिले।

शांति, जीवन के आनंद को मूर्त रूप प्रदान करती है। शांति के लिए शिक्षा में मूल्य शिक्षा भी समाहित है, लेकिन दोनों एक नहीं हैं। शांति, मूल्यों की संगति के लिए प्रासंगिक तौर पर उपयुक्त और लाभदायक शिक्षाशास्त्रीय बिंदु है। शांति, मूल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती है और मानव के आंतरीकरण को प्रेरित करती है। शिक्षा, सीखने की प्रक्रिया को कक्षा की सीमा से मुक्त करने और इसे खोज के आनंद से अनुप्राणित जागरूकता के उत्सव में बदलने की माँग करती है।

शांति के लिए शिक्षा ऐसे ज्ञान, कौशल, अभिरुचि और मूल्यों का पोषण करती है जिनसे शांति की संस्कृति का निर्माण और विकास होता है। अहिंसक तरीके से द्वंद्वों का समाधान करने वाले अमनपसंद लोग तैयार करना इसकी एक दीर्घकालिक रणनीति है। 'शांति के लिए शिक्षा' समग्रतामूलक है। मानवीय मूल्यों के एक ढाँचे के भीतर बच्चों का भौतिक, भावात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास इसके घेरे में आता है। शांति के लिए शिक्षा के दो मुख्य निहितार्थों को समग्रतामूलक वाहक के रूप में पहचाना गया है। यह निहितार्थ निम्नलिखित हैं —

1. शांति, मानवीय अस्तित्व के सभी पहलुओं और आयामों को परस्पर निर्भर तरीके से अपने भीतर शामिल किए हुए है। जो लोग स्वयं में शांतचित्त हैं वही दूसरों के साथ शांतिपूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। इसके साथ ही वे ऐसी संवेदना का विकास कर सकते हैं, जो प्रकृति के प्रति उचित और महत्वपूर्ण रवैये के लिए ज़रूरी होती है। आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक शांति, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकीय शांति के बिना अपूर्ण और अविकास है।
2. पारस्परिकता शांति में अंतर्निहित है। प्यार, स्वतंत्रता और शांति जैसे मूल्य दूसरों के साथ बाँटकर ही पोषित किए जा सकते हैं। इनके बाँटने में ही इनकी समृद्धि होती है। इस तरह शांति के लिए शिक्षा के उद्देश्य दोहरे हैं — (क) लोगों को हिंसा का मार्ग चुनने की बजाए शांति का मार्ग चुनने में सशक्त बनाना, और (ख) उन्हें शांति का उपभोक्ता बनाने की बजाए उसका सर्जक बनाना। इस मायने में शांति के लिए शिक्षा समग्रतामूलक बुनियादी शिक्षा का अनिवार्य घटक है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति का समग्र विकास करना है।

शांति के लिए शिक्षा

यूनेस्को ने 2000–2010 को दुनिया भर के बच्चों के बीच शांति और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देने वाला अंतर्राष्ट्रीय दशक घोषित किया। पिछले कई दशकों में अनेक बार शांति के लिए शिक्षा की पुरज़ोर तरीके से वकालत की जाती रही है। इस संदर्भ में दो मील के पत्थर हैं; पहला — अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, शांति, मानवाधिकार और मौलिक स्वतंत्रताओं के लिए शिक्षा को लेकर यूनेस्को की सिफ़ारिशें (1974) और दूसरा — शांति, मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए शिक्षा से संबंधित यूनेस्को की 1994 की कार्य योजना, जिसे 144 देशों से स्वीकृति मिली है।

भारत में भी कई संस्थान शांति, विशेषतः शांति संबंधी गांधीवादी विचारों के प्रोत्साहन के लिए काम कर रहे हैं, मसलन— गांधी शांति प्रतिष्ठान,

गांधी स्मृति और दर्शन समिति, गांधीवादी अध्ययन संस्थान, जयपुर शांति प्रतिष्ठान इत्यादि। भारत में अहिंसा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की धरोहर और द्वंद्वों को निपटाने में महात्मा गाँधी के तरीकों की एक सांस्कृतिक परपंरा रही है जो दुनिया के अन्य हिस्सों में भी शांति के प्रवक्ताओं और नायकों को प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त गैर-सरकारी संगठन भी शांति अध्ययन से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान देते आए हैं।

शांति के लिए शिक्षा एवं महात्मा गांधी की शांति संबंधी अवधारणा

शांति को अकसर हिंसा की अनुपस्थिति से जोड़ा जाता है। महात्मा गांधी, शोषण को हिंसा का सबसे जाना-पहचाना और व्यावहारिक रूप मानते थे। शोषण चाहे राज्य, समूह, व्यक्ति या मशीन के द्वारा, व्यक्ति का हो या व्यक्ति द्वारा व्यक्ति/व्यक्तियों का हो, अथवा राष्ट्र के द्वारा राष्ट्र का हो। प्यार, सत्य, न्याय, समानता, सहनशीलता, सौहार्द्र, विनम्रता, एकजुटता और आत्मसंयम आदि इन सभी मूल्यों को शांति व्यवहार में लाने पर बल देती है। दूसरों पर हिंसा करने की बजाए स्वयं कष्ट सहने को प्राथमिकता देनी चाहिए। महात्मा गांधी की शांति संबंधी अवधारणा में अग्रलिखित बिंदु शामिल हैं—

1. तनाव, टकराव और हिंसा के सभी रूपों (आतंकवाद और युद्ध समेत) की अनुपस्थिति। शांति का अर्थ ही है, सौहार्द्रपूर्वक मिलजुलकर रहने की क्षमता। यह टकरावों के समाधान के लिए अहिंसक तरीके अपनाने की बात करती है। विविधता कभी-कभी टकरावों को जन्म देती है पर टकरावों की हिंसक परिणति ही हो यह आवश्यक नहीं है।
2. अहिंसक समाज-व्यवस्था का निर्माण यानी संरचनात्मक हिंसा से मुक्त समाज का निर्माण।
3. शोषण और अन्याय के सभी रूपों की अनुपस्थिति।
4. पारिस्थितिकीय संतुलन और संरक्षण अर्थात् ऐसी जीवन-शैली का वरण जो सृजन की पूर्णता में सहायक हो।
5. अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता और सहयोग अर्थात् ऐसी न्यायपूर्ण विश्व-व्यवस्था की रचना जिसकी विशेषता हो सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धरती पर उपलब्ध संसाधनों को साझा करने की इच्छा और पहल। इसका अर्थ है— लालच से ज़रूरत की ओर रूख करने की आवश्यकता।
6. मन की शांति अथवा शांति का मनो-आध्यात्मिक आयाम।

शांति, व्यक्ति से शुरू होकर परिवार, समुदाय, राष्ट्र और वैश्विक ग्राम तक फैलती जाती है। शांति की संस्कृति को प्रोत्साहित करने में दो-स्तरीय रणनीति ही काम आ सकती है। इसके लिए समाज के सदस्यों को हिंसा की बजाए शांति की ओर उन्मुख करने की ज़रूरत है। हमारे जीने का तरीका शांति के अनुशासन से ही निर्देशित होना चाहिए। शिक्षा इन दोनों रणनीतियों के प्रभावकारी होने के लिए ज़रूरी है। इसके लिए शिक्षा को जागरूकता की ओर ले जाना होगा और इस काम को शांति के लिए शिक्षा ही सबसे उत्तम ढंग से परिणत कर सकती है।

शांति के लिए शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत

शांति के लिए शिक्षा से संबंधित कुछ प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन अग्रलिखित है—

1. **शांति निर्माण एवं स्थापना का सिद्धांत**— शांति के लिए शिक्षा से संबंधित यह सिद्धांत शांति के निर्माण एवं उसकी स्थापना पर बल देता है। यह सिद्धांत हिंसा का विरोध करता है, अंतः समूह एवं अंतर्राष्ट्रीय समझ का विकास करता है, सहनशीलता एवं सुलह पर बल देता है। इसके साथ ही सत्य का प्रबंधन, निरस्त्रीकरण एवं पुनर्वास आदि को शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में विशेष महत्व प्रदान करता है।
2. **संघर्ष प्रबंधन एवं परिवर्तन का सिद्धांत**— यह सिद्धांत शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में संघर्ष रोकथाम कौशल, संघर्ष को कम करने एवं मध्यस्थता पर विशेष बल देता है। परिवर्तन के संदर्भ में शिक्षा को एक प्रमुख साधन एवं उपकरण के रूप में स्वीकार भी करता है।
3. **सामाजिक एकता और विकास का सिद्धांत**— सामाजिक एकता और विकास का यह सिद्धांत शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में आपसी समझ के लिए शिक्षा, समावेशी राष्ट्रीय पहचान बनाने के लिए शिक्षा, विभेद का सम्मान, विविधता का स्वागत, बहुसंस्कृतिवाद एवं राष्ट्रीय विकास पर ध्यान केंद्रित करने पर विशेष ज़ोर देता है।
4. **नागरिक शिक्षा का सिद्धांत**— शांति के लिए शिक्षा से संबंधित नागरिक शिक्षा का यह सिद्धांत असामाजिक (समाजविरोधी) व्यवहार में कमी लाने तथा नागरिक भागीदारी को सुनिश्चित करने पर बल देता है। इसके अतिरिक्त यह सिद्धांत सामाजिक उत्तरदायित्व, करुणा एवं मानवीय कार्य, वैश्विक एवं स्थानीय नागरिकता, धार्मिक जातीय, क्षेत्रीय और जेंडर के संदर्भ में सहयोग को विशेष महत्व प्रदान करता है।
5. **लोकतंत्र एवं सामाजिक न्याय का सिद्धांत**— लोकतंत्र एवं सामाजिक न्याय का सिद्धांत शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में समानता के लिए शिक्षा, शासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही, सामाजिक समूह द्वारा सामाजिक संकेतकों की नियमित निगरानी, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं एवं राजनीतिक व्यवस्थाएँ तथा अधिकार एवं शक्ति आदि को विशेष महत्व प्रदान करता है ताकि शांति के लिए शिक्षा को एक मज़बूत आधार प्रदान किया जा सके।
6. **सहनशीलता एवं विविधता का सिद्धांत**— शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में सहनशीलता एवं विविधता का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति के अंदर सहनशीलता से संबंधित गुणों का उचित विकास किया जाए। इसके साथ ही विविधता के सिद्धांत का सम्मान करते व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व एवं शांति के लिए शिक्षा के अगुआ के रूप में तैयार भी किया जाए।
7. **नैतिकता एवं मूल्यों का सिद्धांत**— शांति के लिए शिक्षा का यह सिद्धांत शांति, सम्मान, प्रेम, सहनशीलता, सुख, उत्तरदायित्व, सहयोग, विनम्रता, सादगी, स्वतंत्रता एवं एकता को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त यह सिद्धांत पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय चेतना का विकास करने तथा नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर भी विशेष बल देता है।
8. **जीवन कौशल एवं व्यक्तिगत कल्याण का सिद्धांत**— जीवन कौशल एवं व्यक्तिगत कल्याण के सिद्धांत के अंतर्गत आत्म-जागरूकता, आत्म-सम्मान, आत्म-नियंत्रण, व्यक्तिगत

विकास एवं सशक्तिकरण के लिए शिक्षा तथा कार्यस्थल के लिए व्यक्तिगत कौशल तथा जोखिम एवं एकांतप्रिय व्यवहार में कमी, दूसरों के साथ सामंजस्य एवं सार्थक सह-अस्तित्व के लिए दक्षताएँ एवं सामाजिक कौशल, व्यक्तिगत कौशल, प्रभावशाली संप्रेषण, भावात्मक अधिगम, समानुभूति एवं पूर्वाग्रह से परहेज आदि से संबंधित बातों एवं मुद्दों पर विशेष बल दिया जाता है जिससे कि शांति के लिए शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

9. **मानव अधिकार एवं सतत विकास का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अंतर्गत मानव, बच्चे एवं जेंडर के अधिकारों को जानना एवं सम्मान करना, दुरूपयोग की पहचान एवं इसे खत्म करने के लिए कार्य करना, अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून, दूसरों की देखभाल एवं सम्मान के लिए सीखना, स्वास्थ्य व्यवहार को बढ़ावा देना तथा सामुदायिक नेतृत्व आदि से संबंधित मुद्दों, बातों एवं उद्देश्यों पर विशेष बल दिया जाता है। शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में मानव अधिकार एवं सतत विकास का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण सिद्धांत कहा जा सकता है।

शांति के लिए शिक्षा के विकास से संबंधित मूल्य

शांति के लिए शिक्षा के विकास से संबंधित कुछ प्रमुख मूल्य अग्रलिखित हैं—

1. **प्रेम, प्यार व स्नेह**— आत्म-सम्मान, विश्वास और आदर, सकारात्मक आत्म-समीक्षा, खुलापन, उत्तरदायित्व की गहरी परख, दूसरों की चिंता, वफ़ादारी या निष्ठा, त्याग या बलिदान की समझ अथवा भाव, पुनः समाधान की समझ अथवा भाव, उत्साह, साहस, कोमलता, सहनशीलता आदि।
2. **सहनशीलता**— पारस्परिक सम्मान या आदर, वास्तविक स्वीकृति और आवास, व्यक्तिगत और सांस्कृतिक विभेद के प्रति सम्मान (अनेकता में एकता), शांतिपूर्वक विवाद समाधान या दृढ़ता, सांस्कृतिक विभिन्नता की स्वीकृति एवं सराहना, अल्पसंख्यक समूहों एवं विदेशियों के लिए आदर, शिष्टाचार या आत्मीयता, दिमागी खुलापन आदि।
3. **देखभाल और साझेदारी**— प्रेम, प्यार, स्नेह, महत्व, दिलचस्पी, चिंता, उदारता आदि।
4. **अन्योन्याश्रय व परस्पर निर्भरता**— सृष्टि व अन्यों के साथ अंत:संबंधिता की समझ एवं भाव, वैश्वीकरण एवं राष्ट्रवाद एवं अंतर्राष्ट्रीयवाद सहायता एवं पूरकता की समझ व भाव, अहिंसा, सक्रियभागीदारी, वैश्विक समझ एवं राष्ट्रों के बीच आपसी समझ, सृजनात्मक एवं सामूहिक उत्तरदायित्व और सहयोग, रूपांतरणीय एवं परिवर्तनीय नेतृत्व, भविष्य के प्रति वचनबद्धता आदि।
5. **अनुकंपा या करुणा**— दयालुता, नैतिक बल, दूसरों की आवश्कताओं के प्रति संवेदनशीलता, ख्याति, पोषण, सहायक आदि।
6. **सामंजस्य**— आपसी विश्वास एवं समझ, अपनेपन की भावना या सांस्कृतिक मूल्य, सहयोग या सहकर्त्ता, प्रभावकारी संप्रेषण, अच्छे कार्य के लिए चिंता एवं महत्व, पुनः समाधान की समझ (भाव), सर्वसम्मति के लिए इच्छा आदि।

7. **समानुभूति**— अपने आसपास के लोगों मे दिलचस्पी लेना। उनकी चिंता करना। उनके सुख-दुख को बाँटने का प्रयास करना। अन्य व्यक्तियों के भावों विचारों के तादम्य स्थापित करना। दूसरे व्यक्ति की परिस्थिति को समझते और महसूस करते हुए उसकी मदद का भाव रखना। दूसरे के प्रति कृतज्ञ होना एवं आभार मानना, दिलचस्पी, चिंता आदि।
8. **आध्यात्मिकता, अभौतिकता और धार्मिकता**— आंतरिक शांति, जीवन के प्रति आदर एवं सम्मान होना अथवा रखना, भौतिक एवं आध्यात्मिक क्षमता में विश्वास, मनुष्य के विशुद्ध विकास के लिए वचनबद्ध होना, मनुष्य में विश्वास रखना, विचारों की स्वतंत्रता, विवेक और विश्वास, समभाव, शांति, आंतरिक शक्ति, अखंडता, प्रामाणिकता, धर्म, चिंतनशील दृष्टिकोण/ चिंतनशीलता आदि।
9. **कृतज्ञता या आभार**— प्रशंसा, आदर या सम्मान, स्वीकृति आदि।

शांति के लिए शिक्षा से संबंधित प्रमुख शांति कौशल

शांति के लिए शिक्षा से संबंधित कुछ प्रमुख शांति कौशल के प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. **संप्रेषण कौशल**— संप्रेषण कौशल के अंतर्गत निम्न प्रकार के कौशलों को शामिल किया जाता है—
   - *प्रस्तुतीकरण*— विचारों को सुस्पष्ट और संगतिपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करने में सक्षम होना।
   - *सक्रिय श्रवणता*— अन्य के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना, समझना और पहचानना।
   - *समझौता वार्ता*— संघर्ष पर विराम लगाने के लिए समझौते की एक उपकरण के रूप में भूमिका और सीमाओं को पहचानना; विवाद हल करने की दिशा में सार्थक संवाद की ओर कदम बढ़ाना।
   - *मूक संप्रेषण*— शारीरिक भाषा के अर्थ और महत्व को समझना।
2. **चिंतन कौशल**— चिंतन कौशल के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के कौशल को शामिल किया जाता है—
   - *आलोचनात्मक चिंतन*—तथ्य, विचार और आस्था में भेद करने की योग्यता, भेदभाव और पूर्वाग्रह को पहचानना, तर्क एवं बहस में निहित पूर्वसूचना एवं विषयों और समस्याओं को पहचानना, सही ढंग से तर्क प्रस्तुत करना।
   - *सूचना प्रबंध*—परिकल्पना को आकार देने एवं जाँच की क्षमता होना, हल कहाँ से मिल सकते हैं और सूचना को कैसे स्वीकार और अस्वीकार किया जा सकता है (यह जानकारी भी रखना), प्रभावी ढंग से साक्ष्यों को आँकना, सर्वाधिक उचित कार्यवाही के लिए सक्षम होने हेतु संभावित परिणामों को आँकने की समझ होना।
   - *रचनात्मक चिंतन*—नूतन समाधान और हल तलाशना, गहराई से सोचना एवं चिंतन करना तथा समस्याओं को कई परिप्रेक्ष्यों में देखना।
   - *प्रतिबिंबन*—समस्या से दूर रहना और उसके मुख्य हिस्सों को समझना, चिंतन प्रक्रिया पर कड़ी नज़र रखना और किसी भी समस्या विशेष से निपटने के लिए रणनीति तैयार करना।

- *द्वंद्वात्मक चिंतन*— एक से अधिक दृष्टिकोण से सोचना, सभी दृष्टिकोणों को समझना तथा उससे संबंधित तर्क देने में सक्षम होना।

3. **वैयक्तिक कौशल**— वैयक्तिक कौशल के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के कौशलों को शामिल किया जाता है—

   - *सहयोग*— साझे उद्देश्य के लिए दूसरों के साथ मिलकर प्रभावी ढंग से काम करना।
   - *अनुकूलनशीलता*— तर्क और साक्ष्य की रोशनी में विचार बदलने के लिए इच्छुक होना।
   - *आत्म-अनुशासन*— अपने आचरण को उचित बनाए रखने और प्रभावकारी ढंग से समय का प्रबंधन करने की योग्यता।
   - उत्तरदायित्व— काम का बीड़ा उठाने और उसे ठीक ढंग से पूरा करने की योग्यता और अपने हिस्से के दायित्व का निर्वाह करने को तैयार रहना।
   - *सम्मान*— दूसरों को ध्यान से सुनना, निष्पक्षता और समानता के आधार पर निर्णय लेना तथा इस बात को पहचानना कि दूसरों की आस्था, विचार और दृष्टिकोण आप से अलग हो सकते हैं।

शांति के लिए शिक्षा हेतु विद्यालय में की जाने वाली गतिविधियाँ एवं क्रियाकलाप

शांति के लिए शिक्षा को विद्यालय के सह-पाठ्यक्रम के जरिए भी व्यवस्थित किया जा सकता है। शांति विषय को साकार करने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, कार्यशालाओं, परियोजनाओं एवं क्रियाकलापों आदि को विद्यालय में आयोजित किया जा सकता है—

- विद्यालय एवं पड़ोस में विभिन्न प्रकार के धार्मिक उत्सवों और राष्ट्रीय उत्सवों को मनाना तथा उनके माध्यम से शांति के लिए शिक्षा की अवधारणा का विकास करना।
- अंतर्राष्ट्रीय दिवसों; जैसे— मानवाधिकार दिवस, संयुक्त राष्ट्र दिवस, विकलांग दिवस, पर्यावरण दिवस आदि का आयोजन एवं उनमें छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- वाद-विवाद, संगोष्ठी और विभिन्न प्रकार के आयोजनों में शांति को शामिल कर छात्रों को शांति निर्माण का कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- बच्चों में शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में सहनशीलता एवं समझ को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की कहानियों, घटनाओं, प्रसंगों एवं चर्चाओं आदि को बढ़ावा देना।
- भूमिका निर्वाह, शांति कविताओं एवं कहानियों का सृजन करना, नाटकों का आयोजन एवं शांति गीत की रचना आदि में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- बच्चों में दूसरों के प्रति संवेदनशीलता एवं कल्याण की भावना का विकास करना।
- शांति के लिए शिक्षा के संदेश के प्रचार एवं प्रसार के लिए एकता शिविरों का आयोजन करना आदि।

शांति निर्माता के रूप में शिक्षक

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया एवं व्यवस्था में शिक्षक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। शिक्षक का पहला उत्तरदायित्व बच्चों को एक अच्छा व्यक्ति बनने में सहायता प्रदान करना है और उनको अपनी क्षमताओं का संपूर्ण प्रयोग करने

के लिए उत्साहित करना है। शिक्षक शांति मूल्यों के आदर्श होते हैं। उनमें सुनने की कला, गलती को पहचानने और उसे सही करने की विनम्रता होती है। वे अपने द्वारा किए गए कार्यों की ज़िम्मेदारी लेते हैं, चिंताओं को साझा करते हैं और मतभेदों से परे एक-दूसरे की समस्याओं को हल करते हैं। यदि ये शांति का उपदेश न भी दें तो भी शांति के लिए शिक्षा देते हुए प्रतीत होते हैं, अपने हाव-भावों एवं व्यवहारों से। जो शिक्षक कक्षा में बच्चों पर मार-पिटाई के जरिए अनुशासन थोपते हैं वह समस्या को हल करने की रणनीति के रूप में हिंसा को ही अनुकरणीय बना देता है। कक्षा का सकारात्मक वातावरण कायम करने में शिक्षक की सर्वोच्च भूमिका होती है। एक शिक्षक अपनी अभिवृत्तियों, सोचने के स्वाभाविक तरीकों और शिक्षण के उपागम को आवश्यक रूप से आमंत्रित कर सकता है। वह क्या पढ़ाता है और जो पढ़ाया है उसमें हस्तांतरित मूल्य क्या हैं और इन्हें कैसे पढ़ाया गया है— वह शांति के लिए शिक्षा की पूँजी हैं। शिक्षक ही बच्चों को शांति का संदेश देकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं। उनके द्वारा शिक्षित बच्चे भी शांति का प्रचार-प्रसार करते हैं अर्थात् समाज में शांति का पर्यावरण स्थापित करते हैं अथवा उसकी स्थापना पर बल देते हैं तथा इस प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है एवं अपनी भूमिका का निर्वाह करता है।

शांति के लिए शिक्षा— सुझाव और सिफ़ारिशें

शांति के लिए शिक्षा की आवश्यकता, उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं —

1. शांति, मूल्यों और कौशल को प्रोत्साहित करने से संबंधित अनुपूरक पाठ्य सामग्री तैयार करना।
2. विद्यालयों में शांति क्लब और शांति पुस्तकालयों की स्थापना करना।
3. न्याय और शांति से संबंधित मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए फ़िल्मों, वृत्तचित्रों आदि का संग्रह करना एवं इनको विद्यालय में प्रदर्शित करना।
4. शांति के लिए शिक्षा हेतु मीडिया को एक हिस्सेदार एवं सहायक के रूप में सहयोजित अथवा शामिल करना।
5. महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों को देखते हुए महिलाओं के प्रति सम्मान और ज़िम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए शांति से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करना।
6. ज़िला स्तर पर विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए शांति उत्सवों का आयोजन करना जिससे हम शांति को मनाने एवं विभिन्न प्रकार की बाधाओं से मुक्ति पा सके।
7. विभिन्न धाराओं के विद्यार्थियों के बीच परस्पर विचार-विनिमय के कार्यक्रम आयोजित कराना जो उनको पूर्वाग्रहों, क्षेत्रीय, जाति और वर्गीय बाधाओं से उबरने में मदद करें।
8. स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों द्वारा चलाई जाने वाली शांति परियोजनाओं में स्वयंसेवक की भूमिका निभाने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना और उनके लिए अवसर उपलब्ध कराना।
9. शांति के लिए शिक्षा देने के लिए अध्यापकों और अभिभावकों की कार्यशालाएँ आयोजित कराना।
10. राज्य स्तर के अभिकरणों की स्थापना कराना जैसे—(क) शांति के लिए शिक्षा क्रियान्वयन

की निगरानी के लिए विशेषकर पाठ्यपुस्तक लेखन, अध्यापक शिक्षा, कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा एवं विद्यालय व्यवस्था के संबंध में। (ख) शांति के लिए शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त शोध को बढ़ावा देने के लिए ताकि आँकड़ों और अनुभवों के प्रकाश में पाठ्यचर्या की समीक्षा और सुधार हो सके।

11. शांति के लिए शिक्षा के सभी आयामों (इतिहास, लक्ष्य, उद्देश्य, लाभ) के संदर्भ में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्यापक हिस्सा बनना।
12. पाठ्यचर्या निर्माण में शांति के लिए शिक्षा को समग्र रूप में रखे जाने की आवश्यकता है।
13. शांति के लिए शिक्षा के उद्देश्यों को प्रकट करने के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को पुनर्गठित किया जाए।
14. प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को शिक्षा के स्वीकृत लक्ष्य के अंतर्गत तथा शांति के लिए शिक्षा की विशेष आवश्यकता के प्रकाश में संशोधित एवं पुनर्गठित किया जाना चाहिए।
15. विद्यालयी वातावरण को प्रत्येक प्रकार की हिंसा से अलग रखना चाहिए।
16. एक ऐसी पुस्तिका तैयार की जाए जिसमें शांति के लिए शिक्षा के एकीकृत रूप हेतु दिशा-निर्देश हों और जिनका विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले प्रत्येक विषय और अध्यापक शिक्षा संस्थानों में प्रत्येक अध्यापक, अध्यापक-प्रशिक्षक और पाठ्यपुस्तक लेखक द्वारा पालन किया जाना चाहिए।
17. विद्यालयों में हिंसा के कारण और उपायों पर एक मैनुअल तैयार करना और उसे उपलब्ध कराना। मैनुअल यह दिशा निर्देश दे कि हिंसा के बहुत से प्रकार हैं — मौखिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आपराधिक एवं ढाँचागत आदि।
18. विद्यालयी जीवन को शांति की संस्कृति की दिशा में बढ़ाने के संदर्भ में व्यावहारिक कदम उठाए जाने चाहिए।
19. अभिभावक-अध्यापक संबंधों को स्थापित एवं मज़बूत करना। विद्यालय में पैदा होने वाली समस्याओं और विवादों के प्रति अभिभावक और अध्यापकों को शांति का भाव अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
20. शांति के लिए शिक्षा भविष्य में दी जाने वाली शिक्षा की समीक्षा या नीति में सुधार के लिए मज़बूत उपकरण होने चाहिए। इसे शैक्षिक प्रशासकों के लिए आयोजित किए जाने वाली बहस और अभिमुखीकरण एवं प्रशिक्षण कार्यों में गंभीरता से शामिल किया जाए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शांति के लिए शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है। इसका मकसद लोगों को ऐसे मूल्य, कौशल एवं अभिवृत्तियों से युक्त करना है जिससे कि वे दूसरों के साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार कर सकें तथा उत्तरदायी नागरिक बन सकें। शांति व्यक्त से शुरू होकर परिवार, समुदाय, राष्ट्र और वैश्विक ग्राम तक जाती है। इसी कारण शांति के लिए शिक्षा के संदर्भ में शांति की संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में शांति के लिए शिक्षा से संबंधित मूल्य, कौशल एवं सिद्धांतों आदि पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

संदर्भ

डेलर्स, जे. 1996. *लर्निंग द टेज़र विदिइन: रिपोर्ट ऑफ़ इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन फ़ॉर द 21st सेंचुरी*. पेरिस, यूनेस्को.

पांडे, एस. 2004. *पीस एजुकेशन: सेल्फ इंस्ट्रक्शनल पैकेज फ़ॉर टीचर एजुकेटर्स*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.

बालासूर्या,ए.एस. 2001. *लर्निंग द वे ऑफ़ पीस–ए टीचर्स गाइड टू एजुकेशन फ़ॉर पीस* unesdoc.unesco.org/ark:/4823/pt0000125228 से प्राप्त किया गया।

भारत सरकार. 1986. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 1986*, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

———. 1993. *शिक्षा बिना बोझ के राष्ट्रीय*. सलाहकार समिति की रिपोर्ट (1993). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

यादव, नरेश कुमार. 2012. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. आरोही पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

———. 2013. *सामाजिक अध्ययन/सामाजिक विज्ञान शिक्षण*. आरोही पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

यूनेस्को. 1998. *लर्निंग टू लाइव टूगेदर इन पीस एंड हारमोनी*. यूनेस्को प्रिंसिपल रीजनल ऑफ़िस फ़ॉर एशिया एंड द पेसिफिक. थाइलैंड.

रावत, हरिकृष्ण. 2002. *मानवशास्त्र विश्वकोश*. रावत पब्लिकेशन, जयपुर.

रा.शै.अ.प्र.प. 2000. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2000*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें*. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. सामाजिक विज्ञान का शिक्षण*. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. शांति के लिए शिक्षा*. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली

शर्मा, रामनाथ और राजेन्द्र कुमार शर्मा. 2006. *शैक्षिक समाजशास्त्र*. एटलांटिक पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.

हांडा, एम. एल. 1983. *मेनिफ़ेस्टो फ़ॉर ए पीसफुल वर्ल्ड आर्डर: ए गांधियन पर्सपेक्टिव*. गाँधी भवन, नयी दिल्ली.